

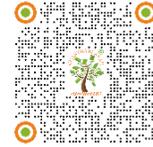
Original Article

## CONTEMPORARY ART, CULTURE AND SOCIAL SCIENCE, AS AGENTS OF SOCIAL DEVELOPMENT

### समकालीन कलाओं का संस्कृति और समाजविज्ञानों से अंतर्संबंध और समाज विकास

Dr. Seema Tiwari 

<sup>1</sup> Professor, Political Science, Government Maharani Laxmibai Girls PG College, Indore, India



#### ABSTRACT

**English:** The present research paper undertakes an interdisciplinary and critical study of the interrelationships between contemporary art, culture, and social development. This research establishes that contemporary art is a highly effective medium of social consciousness and the process of change. In reality, contemporary art and culture play a decisive role in the process of social development.

Art is the emotional and creative expression of society. Sociology conducts an analytical and scientific study of society, while culture provides human sensitivity to sociology. On the other hand, sociology offers structural, social, and historical context to art and culture. The interrelationship among all three influences citizens' overall personality development, both directly and indirectly. Thus, art, culture, and sociology are deeply interconnected and mutually dependent.

Art is the result of human creative power. Disciplines such as painting, sculpture, music, literature, dance, and drama depict social realities. Culture includes religion, values, art, traditions, customs, lifestyles, etc., and reflects the true image of society. In the era of advanced technology, globalization, and digitalization, both contemporary art and culture form the foundational pillars of the functional domain of social sciences. Clearly, the participation of all three—art, culture, and sociology—is essential for holistic social development.

**Hindi:** यह रिसर्च पेपर आज के ज़माने की कला, संस्कृति और सामाजिक विकास के बीच आपसी संबंधों की एक इंटरडिसिप्लिनरी और क्रिटिकल स्टडी करता है। यह रिसर्च यह साबित करती है कि आज के ज़माने की कला सामाजिक चेतना और बदलाव की प्रक्रिया का एक बहुत असरदार ज़रिया है। असल में, आज के ज़माने की कला और संस्कृति सामाजिक विकास की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाते हैं।

कला समाज की इमोशनल और क्रिएटिव अभिव्यक्ति है। सोशियोलॉजी समाज की एनालिटिकल और साइंटिफिक स्टडी करती है, जबकि कल्चर सोशियोलॉजी को इंसानी सेंसिटिविटी देती है। दूसरी ओर, सोशियोलॉजी कला और संस्कृति को स्ट्रक्चरल, सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ देती है। तीनों के बीच का आपसी संबंध नागरिकों के पूरे व्यक्तित्व विकास पर सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से असर डालता है। इस तरह, कला, संस्कृति और सोशियोलॉजी आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

कला इंसान की क्रिएटिव शक्ति का नतीजा है। पेंटिंग, मूर्तिकला, संगीत, साहित्य, नृत्य और नाटक जैसे विषय सामाजिक सच्चाइयों को दिखाते हैं। संस्कृति में धर्म, मूल्य, कला, परंपराएं, रीति-रिवाज, जीवनशैली वगैरह शामिल हैं और यह समाज की सच्ची तस्वीर दिखाती है। एडवांस्ड टेक्नोलॉजी, ग्लोबलाइजेशन और

#### \*Corresponding Author:

Email address: Dr Seema Tiwari ([seemasharmam4@gmail.com](mailto:seemasharmam4@gmail.com))

Received: 24 December 2025; Accepted: 26 January 2026; Published 28 February 2026

DOI: [10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6768](https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6768)

Page Number: 211-214

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

डिजिटलाइजेशन के ज़माने में, कंटेम्परी आर्ट और कल्चर, दोनों ही सोशल साइंस के फंक्शनल डोमेन के बुनियादी पिलर हैं। साफ़ है कि पूरे सोशल डेवलपमेंट के लिए आर्ट, कल्चर और सोशियोलॉजी तीनों का हिस्सा होना ज़रूरी है।

**Keywords:** Contemporary Art, Contemporary Culture, Social Sciences, Social Development, Cultural Change, Social Change, Art and Society, Culture and Identity, Globalization and Culture, समकालीन कला, समकालीन संस्कृति, समाज विज्ञान, समाज विकास, सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन, कला और समाज, संस्कृति और पहचान, वैश्वीकरण और संस्कृति।

## प्रस्तावना

### अध्ययन के उद्देश्य

- 1) समकालीन कलाओं और सामाजिक विज्ञान के बीच अंतर को स्पष्ट करना।
- 2) समकालीन कलाओं की अवधारणा और स्वरूप को समझना।
- 3) समाज विज्ञान की प्रकृति और अध्ययन क्षेत्र का विश्लेषण करना।
- 4) दोनों के मध्य अंतर्संबंधों का अध्ययन करना।
- 5) समाज विकास की प्रक्रिया में समकालीन कला और समाज विज्ञान की भूमिका का मूल्यांकन करना।

### शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध आलेख वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। जिसमें पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, कला समीक्षाओं और सामाजिक विज्ञान से संबंधित वैज्ञानिक शास्त्रों का अध्ययन किया गया है। यह शोध आलेख द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

### संस्कृति, कला और समाज विकास की अवधारणा

समाजविकास एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, शिक्षा और सामाजिक न्याय इत्यादि विभिन्न आयाम परिलक्षित होते हैं। संस्कृति और समकालीन कला इस प्रक्रिया की अभिव्यक्ति है। आज का कलाकार सामाजिक यथार्थ का साक्षी और विश्लेषण भी है। संस्कृति एवं समग्र संपूर्णतय है। जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, परंपरा और अन्य समताएं शामिल हैं। जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में अर्जित करता है। संस्कृति सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करती है। और पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों का हस्तांतरण करती है। संस्कृति समय और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील रहती हैं।

### समकालीन कला और समाज विज्ञान में अंतर

- 1) समकालीन कला भावनात्मक और प्रतीकात्मक है जबकि समाज विज्ञान वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक।
- 2) समकालीन कला रचनात्मक अभिव्यक्ति है जबकि समाज विज्ञान वस्तुनिष्ठ अध्ययन है।
- 3) समकालीन कला दृश्य एवं अनुभव आधारित है और समाज विज्ञान तथ्य और सिद्धांत आधारित है।

### कला और संस्कृति का समाज विकास में योगदान

- 1) सामाजिक समरसता और एकता एक महत्वपूर्ण तथ्य है। सांस्कृतिक उत्सव, परंपराएं और लोक कलाएं समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़कर सामाजिक एकता को बढ़ावा देती हैं।
- 2) कला सामाजिक मुद्दों को उजागर करती है, समाज में जागरूकता लाती है, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाकर सामाजिक चेतना का निर्वहन करती है।
- 3) वैश्वीकरण, सांस्कृतिक आदान प्रदान को बढ़ावा देता है तथा आधुनिक तकनीकी ने कलाओं को नवीन मंच प्रदान किए हैं।
- 4) कला और संस्कृति, समाज का एक अलग ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती है, जिससे सामाजिक आत्मगौरव का विकास होता है।
- 5) प्रगतिशील कला आंदोलनों में सामाजिक बदलाव को गति प्रदान की है, भक्ति आंदोलन, आधुनिक साहित्यिक आंदोलन ने समाज विकास में मदद की है।

### चुनौतियां

#### 1) कला का अध्यधिक व्यावसायीकरण

वर्तमान में कला और संस्कृति को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानने के बजाए लाभ कमाने के साधन के रूप में उपयोग किया जाने लगा है। समाज के सामने वही विषय प्रस्तुत किए जाते हैं, जो बाजार में बिकते हैं जिससे -

- जहां कई गंभीर मुद्दे हाशिए पर चले जाते हैं। वहीं लोक और शास्त्रीय कलाओं की उपेक्षा होती है।
- कला की एक रचनात्मक भूमिका कमजोर होती है।

## 2) वैश्वीकरण और सांस्कृतिक एकरूपता की चुनौती

वैश्वीकरण ने विश्व को जोड़ने का कार्य किया है किन्तु इसके साथ साथ सांस्कृतिक विविधता का खतरा भी बढ़ गया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों, वैश्विक मीडिया और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से स्थानीय भाषाएं, लोकनृत्य, लोकसंगीत और पारंपरिक जीवन शैली लुप्त हो रही है। जिससे समाज अपनी मौलिक पहचान खो रहा है। सांस्कृतिक एकरूपता और पारंपरिक कलाओं के हास के लिए भी वैश्वीकरण जिम्मेदार है। साथ ही व्यावसायीकरण के कारण सांस्कृतिक मूल्यों का हास हुआ है।

## 3) राजनीतिक उपयोग और अलगवर्ग की भावना

कभी कभी संस्कृति का उपयोग राजनीतिक और विचारधाराओं के लिए किया जाता है। जिससे समाज में सांस्कृतिक टकराव, असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन को बढ़ाता है जो कि समाज के सांस्कृतिक और शांतिपूर्ण विकास में बड़ी चुनौती है।

## 4) आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कला की उपेक्षा

वर्तमान शिक्षा पद्धति में अधिक जोर विज्ञान और तकनीकी पर दिया जा रहा है तथा कला, साहित्य का अध्ययन गौण विषय हो गया है। परिणामस्वरूप रचनात्मकता का विकास नहीं हो पा रहा है। जिससे सांस्कृतिक चेतना विकसित नहीं हो पाती और मानवीय संवेदनशीलता में कमी आती है। जो दीर्घकाल में समाज विकास के लिए हानिकारक है।

## 5) अभिजन वर्ग की भूमिका

कला और संस्कृति में अभिजन वर्ग का अत्यधिक प्रभाव रहता है। दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक समुदाय अपनी संस्कृति और कला को संरक्षित कर पाने में असमर्थ होते हैं।

उनकी कला के विभिन्न रूपों को निम्न कला कहकर नजरअंदाज किया जाता है। जो कि सामाजिक समावेशन की प्रक्रिया में बाधा है।

# भारतीय परंपराओं के संरक्षण हेतु नीतियां और योजनाएं

उपरोक्त कारणों से भारतीय पारंपरिक कला और संस्कृति वर्तमान में संरक्षण और संवर्द्धन की चुनौतियों में घिरे हैं। भारतीय शासन में विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से पारंपरिक कलाओं को संरक्षित करने का प्रयास किया है।

## 1) भारतीय संविधान में प्रावधान

अनुच्छेद 29 में अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति के संरक्षण का अधिकार प्रदान किया गया है। अनुच्छेद 49 में राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों और कलात्मक धरोहरों की सुरक्षा की व्यवस्था की गई है।

राज्य नीति के निदेशक तत्वों में सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहन दिया गया है। संविधान भारतीय सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने की नैतिक और कानूनी जिम्मेदारी राज्य को सौंपता है।

# केन्द्र सरकार की मुख्य योजनाएं

## 1) कला संस्कृति विकास योजना

- संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित इस योजना के अंतर्गत पारंपरिक कलाओं को आर्थिक सहायता।
- कला, उत्सव और प्रदर्शनियों का आयोजन।
- सांस्कृतिक संस्थानों को अनुदान देना आदि शामिल है।

## 2) स्कीम फॉर सेफगार्डिंग द इनविजबल कल्चर हेरिटेज योजना

मंत्रालय द्वारा संचालित इस योजना में मौखिक इतिहास, लोक परंपराएं, अनुष्ठान, लोकगीत आदि का संरक्षण, दस्तावेजीकरण और डिजिटल आर्काइव शामिल हैं।

## 3) गुरु षिष्य परंपरा योजना

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित इस योजना में वरिष्ठ कलाकारों, गुरुओं द्वारा युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाना, विलुप्त होती कलाओं को पुर्नजीवन में सहायता दिया जाना शामिल है।

## 4) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और संगीत नाटक अकादमी

शोधकार्य, प्रशिक्षण, मंचप्रस्तुती, रंगमंच, पारंपरिक शैलियों का संरक्षण इत्यादि हेतु इसकी स्थापना की जाती है।

## 5) हस्तशिल्प और लोक कला संरक्षण योजनाएं

कारीगरो को प्रशिक्षण देने हेतु, विपणन में सहायता हेतु तथा डिजाइन इत्यादि में नवाचार हेतु अम्ब्रेला स्कीम फॉर हैंडीक्राफ्ट्स योजना का संचालन किया जा रहा है। मधुबनी पेंटिक, बारली कला, बनारसी साड़ी आदि को पहचान देने हेतु स्थानीय कलाकारों के आर्थिक अधिकारों की रक्षा हेतु योजनाएं बनाई गई है।

## राज्य सरकारों की भूमिका

राज्य स्तर पर नीतियां स्थानीय कलाओं के संरक्षण में अधिक प्रभावी सिद्ध होती है। इसी उद्देश्य से राज्य सरकारें, लोककला उत्सव आयोजित करना, क्षेत्रीय भाषाओं और कलाओं के लिए विशेष अनुदान होना, ललित कला अकादमी की स्थापना करना, राज्य सांस्कृतिक अकादमियों का संचालन इत्यादि कार्य कर रही है।

## डिजिटल और आधुनिक पहल

आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में ई.गैलेरी, ऑनलाइन प्रदर्शन, डिजिटल संग्रहालयों के माध्यम से कला और संस्कृति को संरक्षित किया जा रहा है। हैरिटेज टूरिज्म, कला ग्राम आदि का संचालन किया जा रहा है जिससे रोजगार सृजन के साथ संरक्षण भी हो रहा है।

## भारत में कलाओं के विकास में आने वाली मुश्किलें

### 1) राज्य सरकारों की भूमिका

विद्यालयों और उच्च शिक्षा में कला विषयों को अक्सर गौण समझा जाता है। गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, आधुनिक पाठ्यक्रमों, पुस्तकों, साहित्य का अभाव, कलाओं के विकास में बड़ी चुनौती है।

### 2) आर्थिक संसाधनों की कमी

कलाकारों की नियमित आय, शासकीय अथवा अशासकीय नौकरियों का अभाव, अनुदान और प्रयोगकों की कमी, अवसरों की कमी, कम वेतन आदि मुख्य चुनौतियां हैं।

### 3) नीतिगत और संस्थागत समर्थन का अभाव

फंडिंग, नीतियां और पारदर्शी चयन प्रणालियों की अपर्याप्तता के कारण प्रतिभा के चयन और समुचित विकास की कमी है।

### 4) सामाजिक उपेक्षा और जागरूकता का अभाव

कलाओं को व्यावहारिक और व्यावसायिक केरियर के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। परिणामस्वरूप परिवार और समाज का समर्थन सीमित है जो कलाकारों के मनोबल को गिरा देता है।

### 5) पारंपरिक कलाओं का क्षरण

लोक और शास्त्रीय कलाएं आधुनिक मनोरंजन, बदलती रुचियां भी शहरीकरण के दबाव में पीछे छूट रही हैं।

समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो कला और संस्कृति को लंबे समय तक समाज विकास की योजनाओं में गौण माना गया, जबकि शोध यह दर्शाता है कि विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं हो सकता। सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय विकास समान रूप से आवश्यक हैं। समाज विज्ञान के सिद्धांत और शोध पद्धतियाँ कला और संस्कृति को सामाजिक नीति, शिक्षा, जनकल्याण और विकास कार्यक्रमों से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कला, संस्कृति और समाज विज्ञान का समन्वय समाज विकास की प्रक्रिया को अधिक मानवीय, संवेदनशील और टिकाऊ बनाता है। भविष्य में आवश्यकता है कि नीति-निर्माण, शिक्षा व्यवस्था और विकास योजनाओं में कला और संस्कृति को केंद्र में रखा जाए, ताकि समाज में सामाजिक न्याय, समानता, समावेशन और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ किया जा सके। यही समग्र समाज विकास की दिशा में एक सार्थक और प्रभावी मार्ग है।

## REFERENCES

- Ahuja, R. (2014). Problems of Indian Society (भारतीय समाज की समस्याएँ). Rawat Publications.
- Dube, S. C. (1990). Indian Society (भारतीय समाज). National Book Trust.
- Narayan, B. (2011). Culture and Politics (संस्कृति और राजनीति). Vani Prakashan.
- Pandey, R. S. (2008). History of Indian Art (भारतीय कला का इतिहास). Directorate of Hindi Medium Implementation.
- Verma, N. (2005). Art, Culture and Society (कला, संस्कृति और समाज). Rajkamal Prakashan